ओ३म्

वेदों की खुशबू

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

वेद सब के लिए

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values and Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 67	Year 6	Volume 15	December 2017 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 120-see page 6

आओ प्यार करें, प्यार बांटने की चीज़ है।

उपनिषद में कहा है. ––जो व्यकित स्वयं को दूसरों में देखता है व दूसरों को अपने में अनुभव करता है वह किसी से भी धृणा नहीं कर सकता। और जब घृणा नहीं है तो हृदय में प्यार स्वयं ही पैदा होता है। यह नफरत का जहर हर मनुष्य में स्वभाविक रूप से होता है पर षार्मिक व देवता मनुष्य इस जहर को अपने अन्दर से निकालने में सफल हो जातें हैं और इसी कारण वे महान व अनुकरणिय बन जाने है। प्रभु ईसा मसिह का यह कहना कि ईश्वर उन्हें माफ कर दें क्योंकि वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहें हैं, इस लिये क्षमा के हकदार है, इसी बात को बता रहा है कि आम व्यक्ति यह जानता ही नहीं कि घृणा पतन की और ले जाती है जब कि प्यार मनुष्य को उपर उठा कर मनुष्य से देवता बना देता है। हैरानगी की बात यह है कि हम में अधिक घृणा में ही जीवन यापन कर देतें हैं, और इस सुन्दर विश्व का आन्नद नहीं उठा पाते ।

सब प्रेम एक ही श्रेणी में नहीं डाले जा सकते। इस के भी कई स्तर है। उदाहरण के लिये हर एक मां अपने बच्चे से प्रेम करती है। पर कोई भी स्त्री जब वही प्रेम उस को भी देती है जो कि उसका अपना बच्चा नही तो वह प्रेम उस से उंचें स्तर का प्यार है। इसी तरह हम अक्सर उस से प्रेम करते हैं जो हमारे लिये अच्छा करता है या हमारे बारे में अच्छा सोचता है। परत्तु कोई भी इन्सान यदि उस से भी प्रेम करे जिसने की उसका बुरा किया हो या बुरा चाहता हो, तो अवश्य ही वह प्रेम बहुत उंचे स्तर का है। हम सब को पता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती को उनके रसोईये ने कुछ ऐसे लोगों के बहकावे में आकर जहर दें दिया जो कि अपने स्वार्थो के लिये हिन्दु धर्म में महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लाये जा रहे सुधारों के विरूद्ध थे। परन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वती ने न केवल उस रसोईये को क्षमा कर दिया परन्तु उसे वहां से भाग जाने में सहायता भी की। साधारण व्यकित इसे सुन कर न केवल हैरान ही हाता पर विश्वास भी नहीं करता कि कोई व्यक्ति कैसे अपने ही हत्यारे को न केवल क्षमा करता है बल्कि उस के लिये उस के दिल में

Contact :
BHARTENDU SOOD
Editor, Publisher & Printer
 # 231, Sec. 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

सम्पादक महोदय
साप्ताहिक आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
15 - हनुमान रोड
नई दिल्ली-110001

करूणा भाव भी है। पर यह उसके लिये सम्भव है जो ईश्वर भक्ति द्वारा अपने आप को क्रोद्ध, मोह, लोभ, निन्दा बदले की भावना से मुक्त कर लेता है। उसे हा प्राणी अच्दा ही लगता है। ऐसे में वह उस से बदले की भावना कैसे रख सकता है।

हां आप सही हैं कि हर कोई व्यक्ति ऐसा नहीं कर सकता। यह वही कर सकता है जिसने महर्षि दयानन्द सरस्वती की तरह योगाभ्यास द्वारा यम और नियम के पालन से मन से हर तरह की मैल को दूर कर दिया हो। ऐसा व्यकित स्वयं को दूसरों में देखता है व दूसरों को अपने में अनभव करता है। ऐसे में धृणा का स्थान नही रहता, बदले की भावना खत्म हो जाती है। और जब हृदय में घृणा नहीं है तो हृदय में प्यार व करूणा स्वयं ही पैदा होती है। धृणा किसी भी नाली में फसे उस पत्थर की तरह है जो की पानी को बहने नहीं देता। जैसे ही धृणा रूपी पत्थर को हटाया जाये, प्यार का पानी निरविरोध बहने लगता है।

जैसे ईश्वर प्रेम स्वरूप है वैसे ही ईश्वर ने मनुष्य को भी प्रेम स्वरूप बनाया है यह अलग बात है मनुष्य जब संसार के प्रलोभनो व मन की बृतियों में में बहकर स्वयं को ईश्वर से अलग कर लेता है तो उसमें कई बुराईयां घर करने लगती है जिस में घृणा भी एक है। अर्थात सूर्य रूपी प्रेम को बादल रूपी घृणा के बादल घेर लेते हैं। यह बादल छट भी जाते हैं जब मनुष्य फिर से ईश्वर के नजदीक आ जाता है। ईश्वर के नजदीक आते ही ईश्वरीय गुण---प्यार, करूणा फिर से लौट जाते हैं।

जिस प्रकार प्रकाश से अन्धेरा दूर होता है, उसी प्रकार प्यार से धृणा का खातमा होता है। जैसे अन्धकार अन्धकार द्वारा खत्म नहीं कर सकता उसी तरह धृणा घृणा को नष्ट नहीं कर सकती। प्यार प्रकाश की तरह है व घृणा अन्धेरे के सामान है। जिस के अन्दर घृणा है वह अन्धकार ही फैला सकता है व जिस के अन्दर दूसरों के लिये प्यार है वह सब को प्रदिप्त करता है, रोशनी प्रदान करता है।

यक दार्शनिक के अनुसार-----बजाये इसके कि हम यह कहें कि अपनी घृणा व कोध पर काबू पाओ उससे कहीं अच्छा है हम यह कहें कि सब से प्यार करों जब हम प्यार करेंगे तो घृणा व कोध वैसे ही खत्म हो जायेंगे जैसे दीपक के आते ही अन्धकार खत्म हो जाता है।

व्यक्ति प्यार तभी कर सकता है जब वह दूसरे व्यक्ति से कोई इच्छा या अपेक्षा न करता हो और उससे कुछ पाने के स्थान पर उसे कुछ देना ही चाहता हो। प्यार बिना कुछ इच्छा किये बांटने की चीज है। जो व्यकित प्यार पाने का इच्छुक रहता है वह दुखी रहता है और जो प्यार देना ही अपना जीवन का रास्ता बना लेता है वह सुखी रहता है।

अथर्ववेद में कहा है---- अन्यो अन्यमभि हर्यम वत्सं जातमिवाहन्या ।

एक दूसरे के साथ ऐसा प्रेम करें जैसे गाय अपने नवजात बछड़े के साथ करती है हमारा प्यार बिल्कुल निष्कपट, निःस्वार्थ भाव से पूर्ण समर्पण के साथ होना चाहिए । प्यार में कोई स्वार्थ की भावना, शर्त वा पूर्वाग्रह नहीं हो सकती अगर है तो वह प्यार नहीं व्यापार है।

प्यार व करूणा पाने की इच्छा करना कमज़ोर व्यक्ति की निशानी है जब की शक्तिशाली सदैव देना चाहता है। ऐसी शकित निराकार अजन्मा सर्वशक्तिमान परमान्मा की उपासना द्वारा ही सम्भव है।

बहुत सत्य कहा है--- जिसके मन में प्रेम की हिलोरे नहीं उठती वह मृतक के समान है ।

वेद में मित्रास्य चक्षुषा समीक्षामहे कहकर हम सभी को परस्पर एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखने का आदेश दिया और मित्रता का भाव रखने के लिए परस्पर प्रेम अनिवार्य शर्त है ।

वेद कहते है कि हम सब को मित्रता की दृष्टी से देखे। कोइ भी आपके लिये अन्जान नहीं है सभी आपके मित्र बन सकते हैं। जरूरत इस बात की है कि हम सब के साथ प्रेम भाव रखें।

'ऋग्वेद में आगे कहा है कहा है
सं गच्छध्वं सं वदध्व संवो मनांसि जानतामं।द्य
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाम उपासते

ऐ ऐश्वर्य के अभिलाषी मनुष्यो ! तुम आपस में मिलकर चलो, मिलकर रहो, प्रेम से बातचीत करो, तुम एक दूसरे से मन मिलाकर ज्ञान प्राप्त करो। जिस प्रकार हमारे पूर्वज विद्वान एक दूसरे से अनेक प्रकार का ज्ञान प्राप्त करते हुए

ऐंश्वर्य और उन्नति प्राप्त करते थे, वैसे ही तुम भी करो।

*****

Breaking free from the things that limit us

Neela Sood

Break free yourself from the things that limit us---this sounds well but when it comes to practice in real life; most of us behave like the blind man whose story is being narrated here. A man was blind from birth. He had never seen anything but blackness, so he did not know that there was anything else to see.

He had a doctor friend who was a renowned eye surgeon. Doctor had a keen desire that he could help his friend to see this beautiful world and this would drive him to keep himself abreast of new inventions in the field. One day when the blind man visited his doctor friend, he was greeted with the news " My dear, God willing, soon you will be able to see!"

" I am not able to understand! What is this able to see?" asked the blind man as he had never had the experience of seeing.

The doctor and his other colleagues who were present there tried to explain to him what it really meant, by saying that you'd be able to see green colour, red colour and all sort of coulours what you have heard but not seen---------- you'd be able to see stars shining in the sky. But despite their best efforts to bring him around, the blind man could not quite fathom anything. At last it was clear to everyone, including the blind man that no one could tell him what it was like seeing.

After reaching his home, the blind man thought about doctor's offer again and again and then one day he called the doctor to discuss what was disturbing him all the times " Dear Doctor friend, will I be able to use my cane when I see?" he asked. "I will prefer to remain blind if I can't use my cane," he said emphatically to the astonished doctor.

This blind man mirrors the psychology of most of us who cling on to the same cane year after year to help navigate life's journey. The cane is stubborn habits, prejudices, beliefs, superstitions, need for security, aversion for taking risks and leaving the comfort zone.

As the cane has seemingly been of immense assistance in steering past hurdles to that blind man, he did not want to get independent of that cane though that was least required in a new situation similarly we also refuse to be independent of the numerous canes which we needed as ignorants. We continue to lean on to them for comfort, using them as an easy means to excuse ourelves from venturing to unknown territories. These canes come as convincing alibis for any shortfall in rising to higher levels of personal development.

In reality, this cane of comfort though of some assistance in one stage of life proves to limit men to forge ahead to the next higher stage in life. The canes that assist us in fact simultaneously limit us. They define our boundaries, shorten our horizons, shrink our vision and do not permit us to go beyond the areas where these canes cannot reach.

Getting rid of such canes can be a giant leap from a dim, limiting world into a whole new bright realm of opportunities and growth.

9217970381

*****

श्यामलाल राजवाड़े : छत्तीसगढ़ का दषरथ माँझी

सीताराम गुप्ता

ये लड़का रोज सुबह अपने मवेशी चराने के लिए जंगल में जाता तो इसके कंधों पर लाठी की बजाय एक बहँगी लटकी होती और उसमें एक फावड़ा और कुछ दूसरी चीज़ें रखी होतीं। ये लड़का कौन था और अपने साथ लटकी बहँगी में फावड़ा और कुछ दूसरी चीज़ें क्यों अपने साथ ले जाता था? ये सब जानने के लिए छत्तीसगढ़ चलते हैं। छत्तीसगढ़ के कोरिया जिले में एक गाँव है जिसका नाम है साजा पहाड़ गाँव। यह कोरिया ज़िले के चिरमिरी क्षेत्र के वार्ड नंबर एक में पड़ता है। यहाँ के लोग सालों से पानी की समस्या से बुरी तरह से जूझ रहे थे। गाँव में पानी के स्रोत के रूप में केवल कुछ पुराने कुएँ ही थे जिनका पानी गाँव वालों के लिए पूरा नहीं पड़ता था। गाँव के लोगों के सामने मवेशियों को पानी पिलाने की सबसे बड़ी समस्या थी। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या किया जाए। सरकार की तरफ से भी गाँव वालों को कोई मदद नहीं मिली। गाँव की हालत ये है कि न तो गाँव तक पहुँचने के लिए कोई सड़क है और न गाँव में बिजली ही है।

इसी अभाव व असुविधाओं से ग्रस्त साजा पहाड गाँव में ये बहँगी वाला लड़का रहता था जिसका नाम है श्यामलाल राजवाड़े। जब श्यामलाल की उम्र पंद्रह साल थी तो वो मवेशी चराने के लिए पास के जंगल में जाता था। घास चरने के बाद पशुओं को प्यास लगती तो वो इधर–उधर भागने लगते क्योंकि वहाँ आसपास पानी का कोई साधन नहीं था। लोग चाहते तो आपसी श्रमदान द्वारा पानी की समस्या को हल किया जा सकता था लेकिन ये बात किसी के मन में ही नहीं आई। तभी श्यामलाल ने गाँव में खुद एक तालाब खोदने का फ़ैसला किया। जब गाँव वालों को उसके फैसले के बारे में पता चला तो लोग उसे सहयोग देने की बजाय उसकी हँसी उड़ाने लगे। लेकिन श्यामलाल ने लोगों की हँसी की कुछ परवाह नहीं की।

श्यामलाल ने गाँव के पास ही जंगल में एक अच्छी सी जगह देखकर तालाब खोदने का काम शुरू कर दिया। वह रोज़ अपने पशुओं को वहाँ पर चरने के लिए छोड़ देता और खुद तालाब की खुदाई करने लग जाता। वह अपने फावड़े से मिट्टी खोदता और उसे अपनी बहँगी में भर–भरकर बनने वाले तलाब के चारों ओर डालता रहता। धीरे–धीरे तालाब गहरा होता गया और उसके चारों ओर मेड़ भी बनती गई। वह अकेला ही सालों तक अपने काम में लगा रहा और लगभग एक एकड़ जमीन में 15 फुट गहरा तालाब खोद डाला। श्यामलाल को इस तालाब को खोदने में पूरे सत्ताइस–अट्ठाइस साल लग गए। सत्ताइस–अट्ठाइस साल यानी लगभग दस हज़ार दिन। जब ये ख़बर ज़िले के अधिकारियों और नेताओं तक पहुँची तो सबने श्यामलाल की ख़ूब तारीफ़ की। एक स्थानीय जनप्रतिनिधि ने अपने सहायता कोष से उसे दस हज़ार रुपए भी दिए। दस हज़ार दिन की मेहनत का पुरस्कार दस हज़ार रुपए।

जो भी हो तालाब बन जाने के बाद तो गाँव के लोग भी बहुत खुश हैं क्योंकि श्यामलाल के खोदे गए इस तालाब से गाँव के लोगों का जीवन ही बदल गया है। अब उन्हें पानी के लिए इधर–उधर नहीं भटकना पड़ता। लोग जब श्यामलाल के

इस काम की प्रशंसा करते हैं तो उसे बड़ी खुशी होती है लेकिन उसका कहना है कि यदि इस काम में गाँव के लोगों ने भी उसकी मदद की होती तो बहुत पहले ही यह तालाब खुद कर तैयार हो जाता और लोगों की परेशानी भी बहुत पहले ही दूर हो जाती। अब श्यामलाल 42 साल का हो चुका है और अपने इस काम के लिए पूरे इलाके में प्रसिद्ध हो चुका है। श्यामलाल का यही कहना है कि उसने समाजसेवा के लिए यह तालाब खोदा है। लोगों को खुश देखकर श्यामलाल भी बहुत खुश है। यदि श्यामलाल जैसे लोगों के साथ पूरा समाज भी एकजुट हो जाए तो संसार की तस्वीर ही बदल जाए।

इस दुनिया में धुन के पक्के ऐसे लोगों की कमी नहीं जो असंभव को संभव कर दिखलाते हैं। जो लोग कहते हैं कि अकेला चाना भाड़ नहीं फोड़ सकता वे उन्हें ग़लत साबित कर देते हैं और इसके लिए चाहे उन्हें अपना पूरा जीवन ही क्यों न लगाना पड़े। बिहार के गया ज़िले के गहलौर गाँव के दशरथ माँझी ने तो अकेले के दम पर पूरा पहाड़ ही काटकर सड़क बना डाली थी। पिछले दिनों महाराष्ट्र राज्य के वाषिम जिले के एक छोटे से गाँव में बापूराव ताजने ने भी कुछ ऐसा ही कर दिखाया। पूरे क्षेत्र में भयंकर सूखे के समय जब बापूराव ताजने की पत्नी गाँव में ऊँची जाति वालों के कुएँ से पानी भरने गई तो उन्होंने उसे वहाँ पानी भरने से मना कर दिया। बापूराव ताजने ने अपने मन में दृढ़ निश्चय कर लिया कि चाहे जो हो जाए वह अपना अलग कुआँ खोद कर ही रहेगा। बापूराव ताजने लगातार चालीस दिन तक दिन–रात खुदाई का कार्य करते रहे और कुआँ खोद डाला। आज बापूराव ताजने ही नहीं उसके समुदाय के सभी लोग उस कुएँ से पानी भरते हैं। श्यामलाल का नाम भी उसी सूची में सम्मिलित हो गया है। अब श्यामलाल राजवाड़े को छत्तीसगढ़ का दशरथ माँझी कहें अथवा छत्तीसगढ़ का बापूराव ताजने कहें वह प्रषंसा और सम्मान का पात्र ही नहीं बड़े बड़ों के लिए प्रेरणास्पद व अनुकरणीय भी है।

ए.डी.–106–सी, पीतमपुरा,
दिल्ली–110034
फोन नं. 09555622323

*****

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 120 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दें
2. आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFS Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFS Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFS Code - PSIB0000242**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।
5. पैसे जमा करवा कर सूचित अवश्य कर दें।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया **at par** का चैक भेज दे।

Bad or difficult times prepare us for better times

Suniti Kharbanda

WHILE attending a class of personality development for young executives, a trick question was posed to us: 'Given a choice of good times or bad, what would you choose and why?' With our limited exposure to life, our individual, but unanimous, choice was good times. The reasons were diverse — feel-good factor, happiness, ultimate aim of life, a sense of joy. The trainer listened to us patiently, but without any comment.

Next, we were asked: 'When was the last time you made a conscious decision about inculcating a good habit and why?'

The answers were wide-ranging — 'When I had to undergo a root canal treatment, I decided to brush my teeth twice a day', 'I failed a job interview and decided to remain updated on current affairs', 'My childhood friend was diagnosed with diabetes and I decided to exercise regularly', 'When my sister had an accident and was left bleeding on the road I vowed to help any accident victim I would encounter'. There were more — about poverty leading to financial prudence, death of loved ones resulting in valuing relations and making efforts towards it, failure to get into a professional college and subsequently starting an NGO to assist others passing through the same phase. The list was endless, but the common thread was that there was a low point in life which led to a determination to improve the situation.

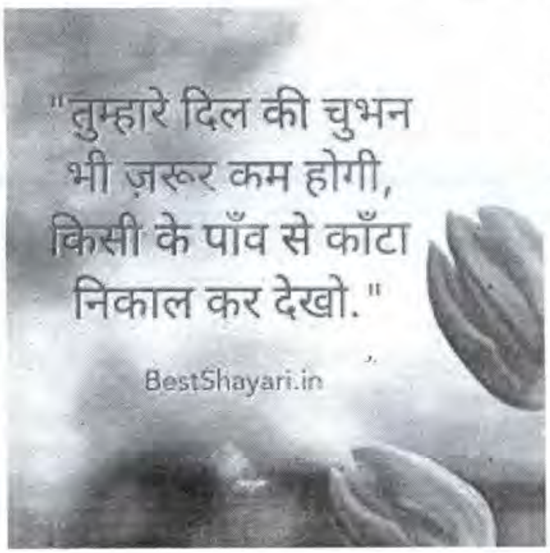

It was then the trainer explained to us: 'Bad or difficult times prepare us for better times to come. It is up to us whether we learn the right lesson or not'. Chuckling, he added: 'If we do not learn, life repeats the lesson.'

On hindsight, I realise the truth of the statement. As students, all of us have experienced tension before an exam and have resolved to be regular with our studies in future. Those who promptly forgot this resolve went through the same cycle of anxiety and sleepless nights before the next exam. Some who kept the resolve sailed through all exams of life.

A few years ago, my school-going niece lamented: 'We've got a horrible chemistry teacher, I have lost all interest in the subject.' I slipped in some advice without trying to be preachy. 'Why don't you read the lesson in advance, so that when it is being taught in class, you'll comprehend it better and can even question your teacher about your doubts?' Something registered in her mind and she followed my advice. Soon, she started excelling in the subject. To my utmost delight, she chose to graduate in chemistry honours and even won a university gold medal. For me, she epitomises the 'winner', after the difficult times she faced in school.

Now, my blessings to the young generation is: 'May you, occasionally, have not-so-good times!'

*****

मृत्यु पर विजय

नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

योगे वर कृश्ण ने विशाद में फंसे अर्जुन को गीता का ज्ञान देते हुए जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः कहकर जिसका भी जन्म हुआ है उसकी मृत्यु को अव यंभावी बता दिया। जन्म अर्थात न्यायकर्ता परमपिता परमे वर की न्याय व्यवस्था के अन्तर्गत जीवात्मा के पूर्व जन्मों के कर्मों के फलों के अनुरूप उसे उसके उपयोग व उपभोग के लिए एक साधन के रूप में मनुश्य का तन प्रदान करने के संयोग को ही जन्म कहते हैं। ठीक इसके विपरीत अपनी आयु पूर्ण कर लेने के उपरान्त आत्मा का जीर्ण ीर्ण मरणधर्मा भारीर के त्याग को ही मृत्यु कहते हैं। वेद भगवान ने भी '**मृत्युरीशे**' कहकर स्पश्ट कर दिया कि मृत्यु की देवी संपूर्ण सृश्टि में हम सभी पर अपना भासन करती है। अब प्र न उत्पन्न होता है कि यदि मृत्यु अव यंभावी है तो मृत्यु पर विजय कैसे प्राप्त की जा सकती है।

मृत्यु पर विजय को समझने के लिए हमें पहले ये समझना होगा कि मृत्यु किसकी होती है और हम कौन हैं और क्या हम मरणधर्मा हैं। प्रथम प्र न मृत्यु किसकी होती है का उत्तर भी योगे वर कृश्ण ने गीता के ज्ञान में देते हुए पांच मूल तत्वों अग्नि, जल, वायु, आका । और पृथ्वी के संयोग व मिलन से बने इस मनुश्य भारीर व साधन को ही मरणधर्मा बताया। साथ ही साथ **नैनं छिन्दन्ति भास्त्राणि नैनं दहति पावकः** ..कहकर कृश्ण ने आत्मा को अजर अमर नित्य और अविना ी बताया। यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के पन्द्रहवें मंत्र में वेद भगवान ने भी '**वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तं भारीरं**' कहकर आत्मा की अजरता अमरता और भारीर के मरणधर्मा होने को स्थापित किया है। यहां यह स्पश्ट हो जाता है कि जीवात्मा मृत्यु से परे है और हमारा मनुश्य का तन अर्थात ई वर प्रदत्त साधन ही मरणधर्मा है। अब यदि हम इस रहस्य को समझ लें कि वास्तव में हम तो इस दिखाई देने वाली देह के अधिपति, इस रथ के संचालक रथी, इस भारीर के अधिश्ठाता भारीरी हैं और यह देही, रथी या भारीरी एक जीवात्मा के रूप से हमें आने वाली अव यंभावी मृत्यु का डर कभी नहीं सताएगा।

मृत्यु पर विजय वास्तव में मृत्यु के डर पर विजय है। एक डरा हुआ कायर व्यक्ति अपने जीवन में सैंकड़ों बार मरता है जबकि निडर साहसी मृत्यु के रहस्य को जानने वाला जीवन में केवल एक बार ही मृत्यु का आलिंगन करता है। पूर्व प्रधानमंत्री भारतरत्न अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने काव्य संग्रह "मेरी इकयावन कविताएं" में स्पश्ट रूप में लिखा है कि हे ई वर

मुझे इतनी भाक्ति देना कि अंतिम दस्तक पर स्वयं उठकर कपाट खोलूं और मृत्यु का आलिंगन करूं। योगे वर कृश्ण ने भी गीता का ज्ञान देते हुए मृत्यु को परिधान परिवर्तन की संज्ञा दी है। जैसे हम प्रतिदिन नहाकर नए वस्त्र पहन कर प्रसन्न होते हैं वैसे ही मृत्यु के उपरान्त इस जीवात्मा के पूर्व कर्मों के आधार पर मिलने वाले नए भारीर व साधन की प्राप्ति के लिए हमें भोक नहीं करता चाहिए अपितु नए साधन की प्राप्ति के लिए हमें प्रसन्नचित होना चाहिए।

वेद भगवना ने भी अनेकों स्थानों पर मृत्यु का भोक ना करने की या मृत्यु से उपर उठने की प्रेरणा दी है। जैसे अथर्ववेद में **त्वां मृत्युर्दयतां मा प्र मेश्ठाः** कहकर बताया कि मृत्यु तेरी रक्षा करे और तू समय से पूर्व न मरे। अथर्ववेद में ही **उत त्वां मृत्योरपीपरं** कहकर वेद भगवान न संदे ा दिया हे जीवात्मा मैं मृत्यु से तुझको उपर उठाता हूं। **मृत्यो मा पुरूशवधीः** कहकर वेद ने संदे ा दिया कि हे मृत्यु तू पुरूश को समय से पूर्व मत मार।

अब प्र न उठता है कि मनुश्य किस प्रकार मृत्यु के डर से विजय पाए और मृत्युंजय हो जाए। मृत्युंजय मंत्र की व्याख्या करते हुए जब हम खरबूजे की उपमा देते हैं और उसकी सुगंधि के चारों ओर फैल जाने की बात करते हैं तो हमें यही संदे ा मिलता है कि मनुश्य के रूप में अपने इस सीमित जीवनकाल में ई वर प्रदत्त साधन मनुश्य के तन का उपयोग करते हुए ऐसे सुंदर यज्ञीय परोपकार के सद्कर्म करें जिससे हमारी सुगंधि य ा चारों ओर फैल जाए और फिर चाहे मृत्यु के उपरान्त हमारा भौतिक भारीर रहे या ना रहे परन्तु हमारा य ा रूपी भारीर सदा सर्वदा के लिए अमर हो जाए और हमारे चले जाने के उपरान्त भी जनमानस में हमारे कर्मों विचारों के माध्यम से हमें जीवित रख सके। वैसे भी भातपथ ब्राह्मण में अमरत्व की व्याख्या करते हुए कहा है कि जिसको उस परम ज्योति के द नि हो जाते हैं अर्थात जो जीवात्मा उस सर्व अन्तर्यामी परमात्मा को अपने ही अंदर आत्मसात कर लेता है वो अमर हो जाता है या जो मरणधर्मा अपनी समस्त कामनाओं को पूर्ण कर लेता है अर्थात यदि मनुश्य अपने जीवन के लक्ष्य अर्थात ई वर की अनुभूति करते हुए मोक्ष को प्राप्त हो जाता है वह अमर हो जाता है।

हम कह सकते हैं मृत्यु के रहस्य को समझकर अपने अर्थात जीवात्मा के और ई वर के सच्चे स्वरूप को समझते हुए ई वर को अन्तर्यामी रूप में अपने ही अंदर जान मान कर सद्कर्म करते हुए जो जीवन के लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है वह मृत्यु पर विजय पा लेता है।

602 जी एच 53
सै. 20 पंचकूला
मो. 09467608686 01724001895

*****

गहरी सांस का गहरा असर

कहते हैं अच्छी सेहत का मूल मन्त्र है—गहरी सांस लेना। गहरी सांस लेना तन और मन दोनो को स्वस्थ बनाती है। हम सभी जानते हैं कि जब तक सांस है तब तक ही हम जिंदा रह सकते है। पर इस से भी अधिक महत्व है कि हम सांस किस तरह लेते है। क्या आप जल्दी जल्दी सांस लेते हैं या फिर बहुत धीरे। यह भी सत्य है कि दिन भर काम में डूबे रहते हुये किसे इस बात की परवाह रहती है कि सांस कैसे आ रहा है या ले रहें है। हां दिन में कुछ समय निकालकर गहरें सांस लेने का अभ्यास सेहत के लिये बहुत लाभकारी है। इससे मस्तिक्ष अधिक सक्रिय बनता है, हृदय गति में स्थिरता आती है और सुधार होता है। रक्त दवाव सामान्य बनाने में सहायक होता है। अगर आप किसी कारण से तनाव में हैं तो तनाव कम होगा, कुछ देर के लिये चिन्ता मुक्त महसूस करेंगे।

प्रश्न उठता है कि गहरी सांस लेने की किया कब करें। प्रात काल उठ कर अभ्यास करना राब से अच्छा है। दिन में जब भी समय मिले कुछ गहरी सांसे लें।

*****

ALREADY A RATNA IN UNIFORM!

Lt-Gen Bhopinder Singh (retd)

BHARAT Ratna, the highest civilian award of the land is awarded `in recognition of exceptional service/performance of the highest order'. Since its inception in 1954, 45 recipients have been bestowed the peepal-leaf-shaped medallion and a sanad (certificate): philosopher S Radhakrishnan, scientist CV Raman and politician C Rajagopalachari were the first to be honoured. The exceptional galaxy of talent includes MS Subbulakshmi, Mother Teresa, Sachin Tendulkar besides the doyens of Indian politics (five presidents, eight prime ministers and five chief ministers) and two non-Indians: Pakistani Khan Abdul Ghaffar Khan and South African humanist and President Nelson Mandela.

Field Marshal K. M. Cariappa

Initially, the criteria was restricted to 'achievements in the arts, literature, science, and public services'. The government later expanded the scope to include 'any field of human endeavour'. Like all awards, it has been subjected to accusations of biases, emanating from the choices, timing and most importantly, the deserving omissions. Yet, when the present Army Chief alluded to the suitability of 'Bharat Ratna' to the late Field Marshal KM Cariappa, OBE, it echoed the silent sentiments of many who had the honour of wearing the 'Uniform'.

In the practice and politics of awards, there is an unsaid bias and traction towards the 'First' in any field of governance or position (eg the 'First' President, the 'First' Prime Minister etc) — herein, the statistical fact of the 'First' Indian Commander-in-Chief of the Army would be a grossly insufficient recognition of the contribution and impact of 'Kipper' the nick name of Field Marshal KM Cariappa.

It is no one's case that Field Marshal KM Cariappa was the most decorated, brilliant field-commander, tactician or strategist who ought to be nominated for those attributes, singularly — in fact, besides the two other equally illustrious five-star officers, Field Marshal Sam Maneckshaw and Marshal of the Air Force Arjan Singh. The real contribution of Field Marshal KM Cariappa lies in the shaping, nurturing and institutionalising of the character, culture and instincts of the Armed Forces at the delicate time of independence, that warranted an apolitical and professional entity.

His ascendancy to the post of C-in-C was after he exhibited successful leadership in the first Indo-Pak war of 1948 and during the uneasy equation with the politicians, who essentially viewed the Armed Forces as a legacy of the British Raj. These chaotic times necessitated the handholding and the tight-reigning of the institutional value systems, which could have swerved in any direction. A thorough professional, he put

his foot down on the political plans to integrate the INA (Indian National Army formed in 1942 to scure freedom to India which worked hand in hand with Japan) elements into the regular forces, whilst the patriot in him easily adopted the INA's 'Jai Hind' as the logical salutation. Unabashedly apolitical with a heightened sense of professional rectitude, military correctness and moral uprightness, he set the base standards for the 'officer and a gentleman' template. Though anglicised in demeanour, he was well aware of the ``wounded' nation's need to promote 'inclusivity', without seeming to destroy the existing frameworks of the Armed Forces —his visionary introduction of the concept of "All India" and "All Class" recruitments with the Brigade of the Guards was a subtle nudge towards 'inclusivity' without the political theatrics.

Similarly, the introduction of National Cadet Corps as an engagement with the youth into discipline and patriotism, or the concept of Territorial Army as a second line of defence were profound in their import.

However, it was his impeccable integrity that engrained the institutional ethos with the highest standards — his insistence on dismissing three senior officers for 'un-officer-like' conduct was unquestionable due to his characteristic fairness: he refused the offer to have his own son released from the Pakistani jail (a fighter pilot who was shot in 1965) by President Ayub Khan with, "My many thanks for your kind gesture, but I request you to release all or release none. Give him no special treatment!"

Whether the 'Bharat Ratna' is officially bestowed or not, he is already the priceless ratna of the Indian Armed Forces, that could only add further lustre and credibility to the legion of former awardees.

*****

REMEMEMBRANCE

स्वर्गीय
डॉ० भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद
1921-1999

Respected Pita Ji,

We remain indebted to you for enriching us with values which save us from sins and wrongs. You showed us the path to a great institution -Arya Samaj, which keeps us away from superstitious beliefs and fake Bawas, self proclaimed gods and messengers of God. We also salute you for inculcating in us the expanded vision of family to include many others , especially the deprived in the society.

*****

अथर्ववेद उपदेश

श्री कृष्ण चन्द्र गर्ग

शुभ विद्या की प्राप्ति से मनुष्य परिवार में तथा परिवार के बाहर मधुर व्यवहार वाला, मधुर सत्य वाणी वाला तथा शुभ कर्म करने वाला बन जाता है।

जितना कोई शुभ विद्या में श्रद्धा बढ़ायेगा उतना अधिक वेग से विद्या उसके पास आएगी।

सत्य विद्या से ही संसार का भला होता है।

जैसे कबूतर दूर–दूर तक संदेश ले जाते हैं।उसी प्रकार विद्वान भी दूर दूर तक विद्या का प्रकाश करें।
विद्या सूर्य की तरह भला करती है।

विद्या को बार–बार दोहराना तथा मनन करना चाहिए। तभी वह हृदय में समाती है। विद्वान वर्षा की भांति सुख देते हैं। वे मानवता को बढ़ाते हैं तथा संसार की उन्नति करते हैं। मनुष्य विद्वानो के प्रति श्रद्धा रखें तथा उनके उपदेशों को ध्यान से सुनकर शुभ कर्म करें। विद्या प्राप्ति के पश्चात कुमार तथा कुमारी का विवाह उनकी अपनी सम्मति से हो। वे अपने गुण, कर्म तथ स्वभाव के अनुरुप विवाह करें।

जैसे शरीर में रुके हुए मल तथा मूत्र को त्यागने से शरीर को चैन मिलता है उसी प्रकार मनुष्य आत्मिक, शरीरिक तथा सामाजिक शत्रुओं के समाप्त होने से सुख पाता है।

जैसे दूध में मधु हितकारी होता है ऐसे ही परिवार में सब हितकारी हों।पुरुषार्थ (मेहनत) से दुखियों की सहायता करके उनकें कष्टों को दूर किया जाये। ऐसे शुभ कर्म से आत्मबल बढ़ता है तथा प्रतिष्ठा मिलती है।

मानसिक रोगों को उत्तम औषधियों तथा शुभ विचारों से ठीक किया जाये। शरीरिक तथा मानसिक रोगों को दूर करने के लिए उनके मूल कारणों को नष्ट किया जाये।

मनुष्य बुद्धि से ही कुविचारों को समाप्त कर सकता है। पापी मनुष्य का मन चंचल होने से दृढ़ नहीं होता।

मनुष्य कुवासनाओं और उनके कारणों को इस प्रकार नष्ट करे जैसे हिंसक जीवों को नष्ट किया जाता है तथा निपुण चिकित्सक सांप आदि के विष को नष्ट करता है।

दुष्कर्मों को निक्कमी वस्तुओं के समान त्याग दिया जाये। जो मनुष्य अपनी आत्मा को गिरा देता है। वह अपुरुषार्थी बन कर रहता है। शुभ विचारो वाले मनुष्य शुभ, कुविचारों वाले मनुष्य कुस्वप्न देखते हैं।

जैसे गंडमालाएं कभी सूख जाती हैं तथा कभी सबल हो जाती हैं ऐसे ही कुवासानाएं कभी निर्बल हो जाती हैं तथा कभी सबल हो जाती हैं।

कुवासानाओं तथा कुविचारों को मनुष्य अपने मन में न आने दे। ये मन को पीड़ाएं देती हैं। इनसे मनुष्य लज्जा महसूस करता है।
मनुष्य नौका तथा वायुयान द्वारा दूर–दूर जाकर छल कपट रहित व्यापार करके धन कमाएं तथा शुभ विद्या का प्रकाश करे।
मनुष्य अनेक शुभ प्रयोगों से धन बढ़ाकर संसार को वर्षा की भांति लाभ पहुँचाएं।

भद्र पुरुष धन को बढ़ाने वाले तथा दरिद्रता को समाप्त करने वाले होते हैं। दरिद्रता दुखदाई होती है। निर्धन लोगों के चित तथा सेकल्प नष्ट हो जाते हैं। वे लज्जित तथा आलसी होकर रहने लगते है।निर्धनता के कारण मनुष्य घर से निकल जाता है, कुरुप हो जाता है, दीन वचन बोलता है, मतिभ्रष्ट हो जाता है। निर्धनता के कारण महामारी आदि रोग आ घेरते हैं।

कुछ अधर्मी लोग अपनी कुवासनाओं से, कुविचारों से, दूसरों की निन्दा करने से, नशों से, आलस्य आदि से निर्धन हो जाते हैं। ऐसे लोगों को सशिक्षा व उपदेश से उनकी मूर्खता को समाप्त करके बुद्विमान बनाया जाए। यदि वे फिर भी न सुधरें तो उनको दण्ड दिया जाए।

जो लुटेरे छल कपट अथवा हिंसा से सीधे–सादे लोगों से धन छीनकर उनको निर्धन बना देते हैं न्याय नियम से उनको कड़ा दण्ड दिया जाए।

विशाल स्वभाव वाले माता पिता की सन्तान विद्वान होती है। यदि माता पिता पराक्रम पूर्वक धन प्राप्त करते हैं तो अच्छे संस्कार पड़ने से सन्तानो की रक्षा होती है।

जो मनुष्य परिश्रम से, बिना छल कपट के तथा बुद्धि से धन प्राप्त करते हैं और धनी बनते है वे ही दूसरों को ज्ञान दे सकते हैं तथा यश प्राप्त करते हैं।

मनुष्य निर्धनता से आने वाले कुविचारों – जैसे छल कपट से दूसरों का धन छीनना आदि – से दूर रहें। जैसे पंख कटे कबूतर को अन्न तथा जल देकर पुष्ट किया जाता है ऐसे ही शासक अपने सुप्रबन्ध से दीन दुखियों को अन्न , जल आदि देकर पुष्ट करे। शासक तथा प्रजा मिलकर निर्धनता समाप्त करे। निर्धनता समाज मे अभिशाप है। पुरषार्थी लोग निर्धन विपतिग्रस्तों के सहायक होकर अपना धर्म निभाएं।

*****

Fragrance of good deeds remains even after death

Gopal Krishan Sharma

We all want name and fame. To be famous when you are alive is one thing and to be remembered when you are no more is something different. The former situation can be thrusted upon with power, money and awe but latter one is possible when you have done good and inspiring deeds.

I knew one such case of a person, who was popularly known as 'Hatti Wala Chachu' of Aloh village in Kangra district. Chachuji's shop had a reputation spreading across a radius of about 10 km. Every item of daily use required by villagers was available in his shop. He was blessed with three daughters. In those days, nobody allowed their girls to attend school, but he let them, and as a result, all were later employed well.

Chachuji had fixed his minimum profit to 4 per cent, after meeting all charges. He never bothered about the MRP and sold the items on minimum profit, much less than the cost on the label. He was so principled that his relation with his customers was just like that of a boss and subordinates.

He kept daily accounts of sales and went through it in the evenings. If he found that he had charged excess amount from any customer during his business hours, he would go to the customer's doorstep personally to return the balance. If the distance was too much for him to cover, he would send across a message to the customer to collect the excess amount from him.

When electricity came to our village, he thought that he was being charged as per the commercial connection. So, he got the connection removed from his shop and opted for an oil lamp.

Another unique thing about him was that he always showed reluctance to attend a wedding, even if it was of his close relative, but always made it a point to attend a funeral ceremony, even in nearby villages.

He was so honest that if a dispute arose between the people of his village, they preferred to approach him and not the panchayat. His verdict found more acceptability.

He never sold cigarette, bidi or any other smoking material to children, even if these items were required and demanded by their fathers. He also remained eager to build paths and clean village wells. If it meant spending from his own pocket, so be it.

Chachuji was a perfect vaid. Patients liked to take treatment from him rather than go to a government ayurvedic dispensary.

I vividly remember when he breathed his last in the year 2006. I was on leave at my native place. When his cremation was taking place at the village nullah, all of a sudden, it began to rain heavily, dousing his pyre. People dispersed and ran to take shelter. When the rain stopped, and they returned to the cremation place, they were astonished to find that the pyre was burning vigorously.

Indeed our good deeds are in the record of God also.

*****

वाणी पर संयम

भगवान ने हमें दो आँखें दी हैं और उनका काम केवल देखना है यानि कि चीजें दो और काम एक। और यदि आँखों में कुछ कमी हो तो उसकी सहायता के लिए चश्मे भी।

दूसरा अंग है कान। कान दो और काम एक। सुनना और केवल सुनना। और यदि कुछ कमी हो तो सहायता के लिए वैज्ञानिक उपकरण भी।

और तीसरा अंग है मुँह, जिसकी सहायता के लिए न तो कोई वैज्ञानिक उपकरण है और न कोई दूसरा विकल्प। मुँह, एक और केवल एक, और काम दो। बोलना और खाना । उसमें भी बोलने का काम जीभ करती है जिस पर ईश्वर ने बत्तीस पहरेदार बैठाये हुये हैं वे भी पत्थर से कठोर। बेचारी कोमल जीभ और पहरेदार पत्थर के। अगर जरा सा भी उल्टा–सीधा बोला तो समझो खैर नहीं।

यानी देखने और सुनने पर कोई अंकुश नहीं, जितना चाहो उतना देखो और सुनो। पर बोलने पर अंकुश। अर्थात् वाणी पर संयम। बहुत सोच समझकर बोलो। कुछ भी बोलने से पहले सौ–सौ बार सोचो और फिर बोलो। क्योंकि शब्द–बाण एक बार मुँह में से निकलने के बाद फिर कभी वापस नहीं आता। अर्थात् बिना सोचे समझे बोलना, विपत्ति–निमंत्रण और मूर्खता से कम नहीं। जीभ पर जब कोई घाव हो जाता है तो वह बहुत जल्दी ठीक हो जाता है। पर ध्यान रहे जीभ के द्वारा शब्दों से जो घाव होता है तो वह कभी भी नहीं भर पाता है। कौन नहीं जानता महाभारत में द्रोपदी द्वारा कहे ये शब्द–––अन्धों की सन्तान अन्धी ही होती है, एक बड़े युद्ध और भारत देश के पतन का कारण बनी। यह माना जा रहा है कि अभी हाल में गुजरात चुनाव में मणीशंकर अययर द्वारा कहें गये कुछ शब्द ही कांग्रेस को विजय से पराजय की और ले आये।

सत्य है आदमी मर जाता है लेकिन शब्द कभी भी नहीं मरता। शब्द सदैव आकाश में ही विद्यमान रहता है। और शब्द–बाण से आहत मन का घाव कभी भी नहीं भर पाता है। जीवन पर्यन्त नहीं। बुद्धिमान व्यक्ति बोलने से पहले दस बार सोचते हैं, बोलने के बाद नहीं। और मूर्ख व्यक्ति पहले बोलते हैं और फिर सोचते हैं, अरे, मैंने यह क्या बोल दिया। पर बाद में अफसोस से क्या फायदा? जब मोवाईल नहीं था और टैलीफोन आम लोगों की पहुच से बाहर था और प्रयोग बहुत महंगा था तो बोलना कम था। आज जब मोवाईल का प्रयोग लगभग मुफत हो गया है तो बोलना बहुत अधिक बड़ गया है , जिस कारण रिश्तों में पहले की अपेक्षा बिगाड अधिक आ रहा है। कहने का अर्थ है अधिक बोलना फायदे मन्द नहीं।

अब आपको ही निर्णय करना है कि आप बुद्धिमान की श्रेणी में आना चाहते हैं या फिर मूर्ख की। एक और बात, आप केवल वही बोल सकते हैं जो आप जानते हैं। और जानने का काम तो आँख और कान करते हैं। और इन्हीं दो अंगों के माध्यम से आदमी ज्ञान प्राप्त करता है। इसलिये बुद्धिमान को तो आँख और कान का ही अधिक उपयोग करना चाहिये। बोलने से ज्ञान प्राप्त नहीं होता। बोलने से तो आप अपना ज्ञान दूसरों को दे सकते हैं, प्राप्त नहीं कर सकते।

विशेषकर तो जो लोग कुछ सीखना या जानना चाहते हैं उन्हें तो कम से कम या ना के बराबर ही बोलना चाहिये। जिस प्रकार शरीर को स्वस्थ रखने के लिये व्रत की महिमा बताई गई है उसी प्रकार मन को स्वस्थ करने के लिये मौन रहने की।

मौन शब्द का संधि विच्छेद किया जाय, तो म+उ+न होता है। अर्थात् मन को संसार की ओर उत्कृष्ट न होने देना और परमात्मा के स्वरूप में लीन करना ही वास्तविक अर्थ में मौन कहा जाता है। वाणी के संयम हेतु मौन अनिवार्य साधन है। मनुष्य अन्य इन्द्रियों के उपयोग में जैसे अपनी शक्ति खर्च करता है, ऐसे ही बोलकर भी वह अपनी शक्ति का बहुत व्यय करता है।

मनुष्य वाणी के संयम द्वारा अपनी शक्तियों को अपव्यय से बचाकर विकसित कर सकता है। मौन से आंतरिक शक्तियों का बहुत विकास होता है। अपनी शक्ति को अपने भीतर संचित करने के लिए मौन धारण करने की आवश्यकता होती है।

कहावत है कि न बोलने में नौ गुण। ये नौ गुणइस प्रकार हैं।

1. किसी की निंदा नहीं होगी।
2. असत्य बोलने से बचेंगे।
3. किसी से वैर नहीं होगा।
4. किसी से क्षमा नहीं माँगनी पड़ेगी।

5. बाद में आपको पछताना नहीं पड़ेगा।
6. समय का दुरुपयोग नहीं होगा।
7. किसी कार्य का बंधन नहीं रहेगा।
8. अपने वास्तविक ज्ञान की रक्षा होगी। अपना अज्ञान मिटेगा।
9. अंतःकरण की शान्ति भंग नहीं होगी।

सुषुप्त शक्तियों को विकसित करने का अमोल साधन है मौन। योग्यता विकसित करने के लिए मौन जैसा सुगम साधन दूसरा कोई नहीं। कहते हैं ज्ञानियों की सभा में अज्ञानियों का भूषण मौन है।
बोलना एक सुंदर कला है। मौन उससे भी ऊँची कला है। कभी–कभी मौन कितने ही अनर्थों को रोकने का उपाय बन जाता है। क्रोध को जीतने में मौन जितना सहायक है उतना सहायक और कोई उपाय नहीं। अतः जब तक हो सके तब तक मौन ही रहना चाहिए। जैन मुनि महीनो मौन रहने का व्रत करते है। इसलिये दिन में कुछ समय के लिये फोन, टैलिविजन, अखवार, पुस्तक से अलग होकर एकांन्त में बैठने का अभ्यास करें।

*****

ऐसा कुछ कर जायें यादों में बस जायें

मीना राणा जिसकी आयु 50 वर्ष है उसकी शादी 1981 में बागपत निवासी श्री विरेन्द्र राणा से 1981 में हुई थी। दस साल बाद मैडिकल परिक्षणों के बाद उन्हें मालुम हो गया कि मीना शिशु को जन्म देने के योग्य नहीं है। 1990 में वे दोनों मुजफरनगर के पास ही एक गांव शुकरटाल में आ गये और उन्होने एक फैंका हुआ बच्चा गोद ले लिया। परन्तु पांच साल बाद उसकी मृत्ये हो गई। पर इस से दम्पती की अनाथ बच्चों को सहारा देने की उनकी भावना में कमी नहीं आई। उन्होने और अनाथ बच्चो अपनाने प्रारम्भ कर दिये।

आज उनके घर में 46 ब्च्चे रहते हैं। मैं इसे अनाथालय नहीं कहूंगा क्योंकि मीना उन्हें अपने बच्चों की तरह पालती है। उनके पास एक विद्यालय है, खेलने का मैदान है, सभी बच्चों के लिये कमरे व सभी की ज़्यरतो को पूरा करने के लिये रसौई। पंचायत ने उसके काम को देखकर जमीन का बड़ा टुकड़ उन्हें दिया है। एक 22 साल की कन्या जिस का पालन यहीं हुआ आज पोस्टग्रेजुएशन कर रही है। खस बात यह है कि जो बच्चो यहां से पल कर निकलते हैं वे उनके साथ जुड़े रहते है। और अपने सार्म्थय के अनुसार जिम्मेवारियां सम्भाल लेते है। बहुतों की शादी भी हो चुकी है। यहां से निकली लड़कियां इसे अपना मायका समझती है।

*****

ऐसा लगता है हम बच्चों से बात ही नहीं कर रहे

मेरे पिता जी की दवाईयों की फारमेसी थी। उन के देहान्त के बाद उस फारमेसी का काम हम देखते है कारण कुछ औषधियां बहुत मशहूर हैं और दूर दूर से डिमांड आती है। यह काम हमें भी तोहफे के रूप में मिला है और हमें न केवल व्यस्त रखता है पर अच्छी आमदनी का जरिया है।

अभी हाल में मेरी पत्नि को लुधियाना से फोन आया कि अमुक औषधि की 3 बोतल चाहिये। मेरी पत्नि ने उन्हें लुधियाना की उस दुकान का पता बता दिया जहां वह औषधि उपलब्ध है। अगला प्रश्न था कि क्या कीमत है। मेरी पत्नि ने बताया कि 120 रूप्ये की एक बोतल मिलेगी। अच्छा अगर हम आप के चण्डिगढ़ से ही ले लें तो क्या कीमत होगी। पत्नि ने बता दिया की 90 रूपये की मिल जायेगी। तभी वह स्त्री बोली—--ऐसा है मेरी बेटी चण्डीगढ़ में ही ऐम सी ऐम डी ए वी कालेज में पढ़ती है। वह आपके पास आयेगी और ले जायेगी। 90 रूप्ये का अन्तर काफी होता है।

कुछ समय बाद ही हमारे घर के सामने ओला अैक्सी से एक लड़की उतरी और 270 रूप्ये दे कर उसने तीन बोतल ले ली । तभी उसने ओला टैक्सी के लिये फोन किया । टैक्सी आई और उस में बैठकर वह चली गई। मेरी पत्नि हैरान थी। हैरान इसलिये कि मां ने तो 90रूप्ये बचाने के लिय उसे हमारे यहां भेजा और उसने कम से कम 200 रूप्ये टैक्सी पर खर्च डाले। शाम को मैं आया तो पत्नि ने स्वभाविक रूप से इस घटना को बताया। मैं पत्नि की तरह हैरान नहीं था। मुझे पता है कि आज माता पिता बच्चों से पूरी बात नहीं करते। अगर मां ने बताया होता कि मैं तुम्हें इस लिये भेज रहीं हूं क्योंकि वहीं से लेने मे 90 रूप्ये की बच्चत है, तो सम्भवत वह लड़की कम से कम टैक्सी में नहीं आती।

मैं देख रहां हू कि बहुत सारे माता पिता अपनी जिन्दगी तो कमाने मे लगा देते हैं। अपने खर्च का जब सवाल आता है तो हर तरह कि किफायत करनें की सोचते है। पर बच्चों का सवाल आता है तो उनका दिल दरया दिल होता है। कहीं बच्चे का दिल न टूट जाये या फिर बच्चा कुछ कर न लें। यह बच्चे की पढ़ाई तक ही सिमित रहे तब भी मान लिया पर उसके बाद भी उनका जीवन उनके शैाक पूरे करने में चला जाता है। और कई बार यह शौक बहुत निराले होते है। कभी लड़के को कार का शौक है । कार का शोक बुरा नहीं अगर कार अपनी आय से लो।

आप शिकायत तब करें अगर माता पिता को कुछ शिकायत हो———अक्सर सुनने में आता है। जो है इन्हीं का है। आज भी और कल भी। फिर आखिर कमा किस लिये रहें है। परन्तु मेरा मानना है कि ऐसा पालन पोषण बच्चे के स्वावलम्बी बनने में आवश्यक वाधक है। और जो स्वावलम्बी नहीं वह जीवन में कुछ नहीं बन सकता। इसलिये यदि आपने बच्चे को किफायत से और अपने कमायें हुये पर जीवन काटने की शिक्षा दे दी है तो यह बहुत बड़ी शिक्षा है जो कि सारा जीवन उसको सुख देगी।

कहते है.---frugality is the mother of all virtues. Two things that I imbibed from my father are frugal living and to be health conscious. Both proved to be very useful in my life. His concept of frugality can be summed up in this one-liner — 'Don't send a telegram if you can convey your message by a post card'. I grew up practicing these ideals. He believed that frugality is the mother of all virtues. If you are frugal, most likely you will not be dishonest. Once you are upright and honest, you will have peace of mind and when you have it, you will be healthy also, because good health involves both physical and mental state. But nobody other than the parents can teach children about this virtue of frugality with their own conduct and personal counseling. And if children are spendthrift, no body other than the parents can be blamed because they chose to finance whatsoever children demanded without looking in to the merit of their need.

*****

अच्छा हो मानव अपना भी सुधार करे

महेश पोरवाल

मानव अक्सर सोचता है कि जो भी उसके आस पास नजर आ रहा है उसको बनाने वाला वह ही है।

पुरातनकाल से आज तक जो भी परिवर्तन नज़र आता है वह मानव की सफलता की कहानी बयांन करता है। कुछ सैंकड़ो साल पहिले तक, यह भी पता नहीं था अमेरिका नाम का कोई देश भी है आज भारत में रहने वाला व्यक्ति अक्सर वहां घूमने जाता है। आज मानव चन्द्रमा तब पहुंच गया है और दूसरे ग्रह भी उसकी पहुंच के बाहर नहीं। उसकी भौतिक इच्छाओं को पूरा करने के लिये सब सुख सम्पति है जो कि वह सौ साल पहले तक सोच भी नहीं सकता था। सौ साल पहले कभी किसी ने यह नहीं सोचा था कि आप चलते फिरते हजारो मील दूर अमेरिका में बैठे व्यक्ति से मोबाईल पर बात कर सकेंगे। पर इतना सब होने के बावजूद आज का मानव न तो सही मायने में प्रसन्न है और न ही वह सुरक्षित और निर्भय महसूस करता है। जो भी प्रसन्नता होती है वह क्षणिक होती है न कि चिरस्थाई।

आज का मानव अपने आस पास की सभी चीजों में तो सुंधार ला रहा है ताकी उसका जीवन और सुख मय बन जाये। उदाहरण के लिये, पहले पशु उसकी सवारी थे, फिर घोड़ा गाड़ी आई, उसके बाद रेल गाड़ी और आज वह वातानकुलित अपनी कार में चलता है। पर अच्चम्भे की बात यह है कि वह अपने आप को नही सुधार रहा। वह अधिक से अधिक स्वार्थी हो रहा है, लोभ उसके जीवन का अभिन्न अंग बन गया है, अपने पास सब होते हुये भी दूसरों की सम्पति को हथ़ियाना चाहता है, अपनी उन्नति में ही खुश है, दूसरों की उन्नति से उसे ईर्ष्या होती है। वह स्वयं से ही प्यार करता है और बिना दूसरे को प्यार किये चाहता है कि सब उसे प्यार करें। उसे केवल अपने ही भविष्य की ही चिन्ता है। वह अपने आप को ही धोखा देने में लगा हैं। इसी लिये दुखी है।

अगर उसे ऐसी हालत से बचना है तो उसे अपनी आध्यात्मिक, मानसिक और शारिरिक हालत को सुधारना होगा। पर कैसे? क्या अधिक धन, हथियार और शक्ति का संग्रह करके ? नहीं, यह तो उस के पास पहले से हैं। यह तभी सम्भव है जब वह संवेदनशील बने। अपने संग्रह से पहले दूसरों की ज़रूरतों को भी ध्यान में रखे। दूसरों के लिये त्याग का अर्थ है ईश्वर के प्राणीयों से प्रेम और यह उस प्रभु की सब से बड़ी पूजा है।

एक भक्त थे, बड़े प्रेम से ईश्वर को याद करते थे। एक दिन एक देवदूत आया, उसके पास नामों की दो सूचीयां थी। एक सूची में उनके नाम थे जो कि भगवान को प्यार करते थे। दूसरी सूची उन लोगों की थी, जिन्हे भगवान प्यार करता है। भक्त ने देवदूत से पूछा कि क्या उस का नाम पहली सूची में है? देवदूत ने कहा कि आप का नाम सूची में सब से उपर है। प्रसन्न होकर उसने फिर पूछा क्या दूसरी सूची में भी उसका नाम सब से उपर है? वह यह जानकर वहुत हैरान हुआ जब देवदूत ने बताया कि दुसरी सूची में उसका नाम बहुत नीचे था और उसके अमुक पड़ोसी का सब से उपर था। भक्त ने आश्चर्य के साथ कहा ——" किन्तु वह तो भगवान का नाम लेता ही नहीं है। मैने उसे कभी संध्या, पूजा, भजन, किर्तन करते हुए नहीं देखा। हां, वह दूसरों की सहायता करने, दूसरों के काम करने, बीमारों, गरीबों और दुखियों की सेवा करने में लगा रहता है।"

देवदूत ने कहा——" यही कारण है कि भगवान उसे सब से अधिक प्यार करते हैं। जो भगवान के बन्दों को चाहता है, भगवान भी उसे चाहते हैं।

ऐसे लोग भागवान से क्या प्रार्थना करते हैं,

हे मेरे स्वामी, हे मेरे प्रभु, यदि आप मुझ से प्रसन्न हैं तो मेरी

यह प्रार्थना है——" मुझे राज्य नहीं चाहिये। मुक्ति का आन्नद नहीं चाहिये! एक ही इच्छा है मेरी कि दुखों से तपते हुए लोगों के कष्ट दूर हो जायें। सुखी बसे संसार सब , दुखिया रहे न कोय। पर केवल प्रार्थना से कुछ नहीं होने वाला। जो हमारे पास हमारी आवश्यकता से अधिक है, उसे अभवग्रस्तों के साथ बांटना ही असली प्रभुभक्ति है।

गीता में श्री कृष्ण कहते हैं कि अगर आप अनजाने में किये जा रहे पापों से बचना चाहते हैं तो दूसरों के लिये त्याग करें और परोपकार की भावना लायें। अगर आप स्वयं ही अपना कमाया धन भोगने लग पड़ेंगें तो याद रखीये भोग आप को भोगना शुरू कर देंगे और आप पापों से बच नहीं सकेगें और उन पापों का फल भोगना पड़ेगा।

याद रखीये जो आन्तिरिक खुशी, देने मे, त्याग करने में है, वह लेने में नहीं या संग्रह करने में नहीं।उसी समाज में सुख शान्ति रहती है जहां अधिक सम्पन वर्ग कम भाग्यशाली लोगों के बारे में सोचता है और उनको उपर उठाने के लिये त्याग करता है। हमारा परिवार भी तभी तक परिवार रहता है जब परिवार के सदस्य एक दूसरे की खुशी के लिये त्याग करते हैं। जब यह त्याग की भावना समाप्त होना प्रारम्भ होती है, परिवार भी बिखरने लगता है। त्याग की भावना जोड़ती है और स्वार्थ तोड़ता है। यही नियम समाज और देश पर लागू होता है। इसलिये अच्छा होगा त्याग के गुण को हम जीवन में लायें।

*****

Determination & Commitment to Serve

Dr. O.P. Setia

The story pertains to the incident when France's largest river Sian started overflowing uncontrollably. It was evening time. A boy was walking over the pedestrian path along the border line of the river towards his home. Suddenly he observed water oozing out of a hole in the boundary wall of the river. The boy was very intelligent. Immediately, he realized the dreadful results of this happening as a large part of the boundary wall of the river was likely to fall due to the enhanced pressure of water and resultant enlargement of the hole and the consequential outflow of water which may drown the whole city.

The boy tried his best to fill the hole with earth. The oozing out of the water stopped for some time but due to the enhanced speed of the water flow, the extra earth, put by him, was washed away and resultantly the hole got enlarged. The boy was extremely disturbed. The city was far off and it may take time to inform about the fateful incident to the concerned authorities over there and resultantly the river's border wall may fall down. So, finding no other way, the boy laid himself against the hole-spot and passed over the whole night in this way. On the other side, the boy's parents were disturbed the whole night about the whereabouts of their son, what could have gone wrong with him and whether some mishap occurred? Besides, it was not clear as to how and where they should search for their son during the night time. Early in the morning, the boy's parents started searching for him along the boundary of the river.

When the boy saw his parents, approaching, he cried and called over his parents towards him and requested them to make some arrangements to stop the so exuberant flow of water from the existing hole in the boundary wall. Accordingly, the boy's parents reached the city to convey the requisite information about the hole in the boundary wall of the river and the need of its closure by the authorities. Soon the concerned authorities arrived at the scene and immediately repaired the boundary wall of the river.

The Govt honoured the boy for his outstanding courage and bravery. This very boy afterwards became the President of France. His name was Napoleon Bonapart. Men, who work with utmost determination for the welfare of the people, can only become the leaders. The true direction/guidance to the people flows down through these committed persons.

Dy. President
Arya Samaj, Sec. 32, Chandigarh

*****

पुस्तक

(English book of short stories)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी व विभिन्न अंग्रेजी समाचार पत्रों में छपी 70 कहानियों का संग्रह एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है जिसका नाम है Our musings। इसकी कीमत 150 रूपये है।

जो भी इसे लेने के इच्छुक हों वह मात्र 100 रूप्या भेज कर या हमारे किसी भी बैंक ऐकांउट(Bank Account) में पैसे डाल कर मंगवा सकते है। भेजने का खर्चा हमारा होगा। Account Nos वही हैं जो वैदिक थोटस पत्रिका के लिये है।

मंगवाने से पहले निम्न बातों का कृपया ख्याल रखें पुस्तक अंग्रेजी भाषा में है। Book is in English कहानियां धार्मिक नहीं परन्तु जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़ी है। Stories are on various aspects of human life.

नीला सूद, भारतेन्दु सूद

0172–2662870, 9217970381

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता

हमदर्द, डबार,

वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगड़ी,

कामधेनु जल व अन्य

आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :
HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,
GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL
& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines
Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh
Tel.: 0172-2708497

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

"We need a greater goal in front of us to inspire us and the higher the goal, the greater the enthusiasm. We discover new resources of energy welling up in ourselves... we can look up to that goal and draw inspiration from it for our actions."

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA
D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab
Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465
Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

दलित धर्म परिवर्तन क्यों करते हैं?

इतिहास इस बात का साक्षी है कि दलित लोगों के साथ कथित हिन्दुओं ने बुरा व्यवहार किया है, जिससे विवश होकर इन्हें धर्म परिवर्तन करना पड़ा। मंदिरों के निर्माण आदि में इन लोगों का सहयोग होने के बावजूद मंदिरों में इनका प्रवेश करना मना है। सात समुद्र पार से पादरी आकर इनके बच्चों को शिक्षा दें तथा मानवता से भरा प्यार दें, तब इनके माता–पिता के लिए ये पादरी देवता जैसे क्यों न लगें? हम इन लोगों को दुत्कारें और ये मुल्ला और पादरी उन्हें अपनाने के लिए तैयार रहें, तब ये दलित क्यों न धर्मांतरण करें? इस देश के नेता अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए दल बदल करके लाभ उठाते रहें और सुख भोगते रहें तो ये दलित समाज के लोग अपने बच्चों के हित के लिए धर्मांतरण न करें।

मुझे याद है, आगरे जिले के एक गांव पनवाड़ी ने हरिजनों की बारात नहीं निकलने दी गई, क्योंकि दुल्हा घोड़ी पर सवार था। रिवाड़ी जिले के कालड़बात गांव में हरिजनों की इसलिए पिटाई की गई कि सभी अच्छे कपड़े पहनकर मेले में जा रहे थे।मध्य प्रदेश के शिवपुरी जिले के तलैया गांव में हरिजन औरतों की बुरी तरह पिटाई इसलिए की गई कि उन्होंने नाचने से मना कर दिया। इन सारी बातों को झेलकर भी दलित लोग हिन्दू धर्म को अपनाए हुए हैं, क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है? दुर्भाग्य से आज देश का हर वर्ग राजनीतिज्ञों के पीछे भागता है, मानों राजनीतिज्ञ ही देश के भाग्य को बदल सकते हैं। आज सार्वजनिक जीवन में खोटे सिक्कों का चलन इतना अधिक हो गया है कि अच्छे–सिक्के यदि कहीं दिखाई भी देते हैं तो वे नकली मालूम पड़ते हैं।

आज तो जितना अधिक तिकड़मी, भ्रष्ट, असामाजिक प्रवृत्ति का व्यक्ति होगा। उसके लिए विकास के द्वार खुले हुए हैं। जिसे काल धन की सहायता मिलती है, वह राजनीति का मुखिया बन जाता है। जिसके पीछे कोई सम्प्रदाय, जाति, मजहब होता है, उसके संकेत पर सत्ता प्रतिष्ठान उठक बैठक लगाते हैं। विदेशी धन पर पलने वाला स्वदेशी का प्रवक्ता बन जाता है। देश की अखंडता को खंडित करने वाले राष्ट्रीय एकता के सूत्रधार समझे जाते हैं।

उल्लेख करने मात्र से इसका समाधान नहीं है। समाधान इसमें है कि हम चुनौती को किस प्रकार से लेते हैं? हम प्रण करें कि स्वामी श्रद्धानन्द, डॉ. हेडगेवार के बताए रास्ते पर चलकर दलितों केन्द्रीय से अपना खून समझें। उन्हें यह आभास न हो कि वे भारत में रहते हुए दूसरी श्रेणी के नागरिक है।, तभी हम धर्मांतरण को रोकने में सफल हो सकेंगे। – मामचन्द रिवाड़िया, पूर्व मंत्री आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली में जा रहे थे।

*****

मूर्तिपूजा का खण्डन और महर्षि दयानन्द सरस्वती

मूर्तिपूजा का खण्डन करते हुए स्वामीजी अनेक प्रबल तर्क देते थें। इसलाम के मोहम्मद साहब की तरह ही उनका भी मानना था कि मूर्ती पूजा धर्म और समाज मे सब बुराईयों की जननी है। उनका कहना था कि जब परमेश्वर निराकार, सर्वव्यापक है तो उस की मूर्ति कैसे बन सकती है। कैसे आप उसकी मूर्ती बनाकर आप उसे एक भवन में कैद कर सकते है।

यदि मूर्ति के दर्शनमात्र से परमेश्वर का स्मरण हो जाये तो परमेश्वर के बनाये पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति आदि अनेक पदार्थ, जिन में ईश्वर ने अद्‌भुत रचना का आभास होता है,, उन को देखकर भी परमेश्वर का स्मरण हो सकता है, फिर मूर्ती क्यों बनाई जाये। इसलिये मूर्ती बनाकर ईश्वर को कमरे में कैद करने की आवश्यकता नहीं। उसकी बनाई अदभुत रचना में ही ईश्वर के दर्शन करें।

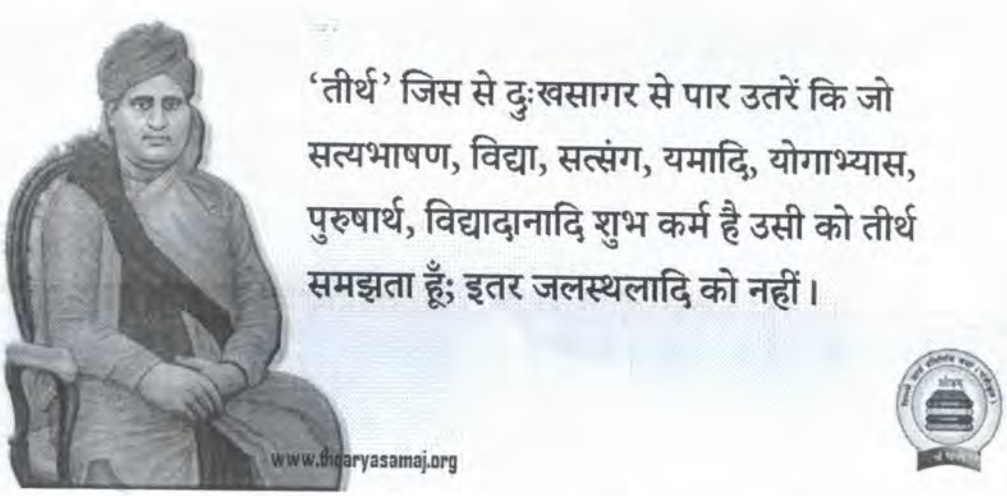

जो कहते हैं कि मूर्ति को देखने से परमेश्वर का स्मरण होता तो यह भी मानकर चलना होगा कि जब मूर्ति उनके सामने न होगी तो वे परमेश्वर से अपने आप को दूर समझेगे व गलत काम करने में कोई परहेज नहीं करेगें क्योंकि वे समझेंगे क्योंकि उनका साचना होगा कि इस समय यहां उन्हें कोई नहीं देख रहा। और जब व्यक्ति यह मानकर चलेगा कि ईश्वर हर जगह विद्यमान है और उसके हर कर्म उस की नजर में हैं तो वह बुरा काम करता हुआ डरेगा।

इस बात को हम इस छोटी सी कहानी द्वारा समझ सकते हैं। एक गुरू के दो शिष्य थे। जब उनकी शिक्षा खत्म हो गई तो गुरू ने उन दोनो को एक एक कबूतर दिया और कहा -----यहां से दूर जंगल में चले जाओ। जहां तुम्हें कोई देख न रहा हो वहां इस कबूतर को मार देना। गुरू ने दोनो शिष्यों को अलग अलग दिशा में भेज दिया। कुछ देर बाद पहला शिष्य आया और बोला----गुरू देव जहां मुझे कोई नहीं देख रहा था, वहां मैने कबूतर को मार दिया। दूसरा शिष्य शाम गये कबूतर को हाथ में लिये हारा थका बापिस आकर बोला--------गुरू देव मुझे कोई ऐसा स्थान नहीं मिला जहां मुझे कोई देख न रहा हो। आप ने ही तो पढ़ाया था, ईश्वर हर जगह विराजमान है। इसलिये मैं कबूतर को मार न सका। यही फर्क है मूर्ती में भगवान को मानना और कण कण में ईश्वर को मानना

शिक्षा------ईश्वर को कण कण में जाने और माने कि ईश्वर हमारे कार्यो को हर समय देख रहा है।

*****

क्या रिश्तों की खटास मौत भी नहीं मिटा सकती ?

अगर चण्डीगढ़ की हाल की घटना को देखें तो ऐसा लगता है कि हमारे परिवारिक सम्बन्धों का धागा इतना कमजोर हो चुका है, कि रिश्तों में आई खटास को मौत भी मिटाने में असफल हो रही है। चण्डीगढ़ सैक्टर 8 स्थित कोठी में अकेले रह रहे पिता की अचानक मौत हो गई। पत्नि और बेटा जो कि अमेरिका में रहते हैं, उनको सूचना भेजी गई व मृतक शरीर को रख दिया गया ताकि उनके आने पर ही अंतिम संस्कार पुत्र के हाथों ही हो। चार दिन बाद पुत्र का संदेश आया------वह पिता के संस्कार में नहीं आ सकता, बुआ से सारी रस्में करवा ली जायें।

सात समन्दर पार से आए बेटे के संदेश ने रिश्तों के ताने बाने को छिन्न भिन्न कर दिया। सबाल यह है कि क्या इसी दिन के लिये इंसान औलाद की कामना करता है और जिन्दगी भर तिल मिल करता है। अधिकतर मां बाप के अपने शौक अधुरे रह जाते है ताकी बच्चों को अच्छी से अच्छी शिक्षा दी जा सके, उनकी हर खुवाईश पूरी की जा सके। यही नहीं, इन्हीं बच्चों के लिये कई बार मां बाप अपने निकट सम्बन्धियों से भी दूरी कर लेते है, और आपस में भी दूरी कर लेते है। और वही बच्चे मां बाप को बुढ़ापे में अकेला तड़पने के लिये छोड़ देते है।

मैं इस के लिये कुछ हद तक मां बाप को भी दोष दूंगा। बच्चे सब को प्यारे हैं पर बच्चे सब कुछ भी नहीं होते । प्यार और मोह में बहुत बड़ा फर्क है। जब हम मोह से ग्रस्त, बच्चों का पालन पोषण दुनिया में बाकी सब कुछ भूल कर, अपने मानविय कर्तव्यों को दर किनारे कर करते है तो ऐसा समय देखने की अधिक सम्भावना हो जाती है क्योंकि बच्चा यह सोचने प्रारम्भ कर देता है कि माता पिता से सब कुछ प्राप्त करना उसका हक है, वह माता पिता के प्रति अपने कर्तव्य से अबोद्ध हो जाता है क्योंकि जब समय था तब तो किसी ने उस को बताया नहीं और जिस समय उसका मन अपेक्षाओं से भरा हो उस समय उस को बताने का कोई फायदा नहीं। बच्चों का अर्थ यह नही हम उनके लिये माता पिता, भाई बहन, मित्र, समाज इन सब को दर किनारे कर दें। यदि मैं अपने माता पिता बड़े भाई बहनों को सम्भालूंगा तभी मैं बच्चो से अपने प्रति यह उमीद कर सकता हूं।

एक गलत भ्रांती जो कि हमारे देश में संस्कृती प्रमियों ने पैदा की है वह है कि आपसी सम्बन्धों और रिश्तों की कदर हम हिन्दुस्तानी करतें हैं, विदेशी नहीं करते। यह महज एक बकवास है और बहुत बड़ा झूठ है । यह मानविय गुण सब जगह हैं और हमारे यहां से कहीं अधिक। हमारे यहां तो जीवन पैसे बटोरने में ही चला जाता है बाकी जगह खास कर उन्नत देशों में लोग इस लोभ और बटोरने की प्रवृति से बाहर निकलकर दूसरों के लिये जिनके साथ केवल उनका मानवता का रिश्ता होता है, बहुत कुछ करते है।

फिर भी कोई भी रिश्तों की खटास ऐसी नहीं जिसे मौत न मिटा सके। हां कोई मनुष्य के रूप में दानव है तो कुछ नहीं किया जा सकता।

*****

रजि. नं. : 4262/12

।। ओ३म् ।।

फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला

E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

Mrs Sneh Mahajan with Bal ashram Children

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

मधुकर कौड़ा लेखराम (+91 7589219746)

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर
कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

SVANIK POPLI

RAJINDER RANI VERMA
W/O BHAG CHAND VERMA

AMIR CHAND TANDON

MRS SHASHI NAYYAR

SHAKUNTLA DEVI
M/O SATINDER BAKSHI

VINAY KHANNA

मजबूती में बे-मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years in service

DIPLAST

PLASTICS LIMITED

AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/-, 75 words Rs. 100/-

Contact : Bhartendu Sood, # 231, Sector 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in